अंतरा-शब्दशक्ति

खामोश एहसास

(काव्य संग्रह)

श्रीमती मीनाक्षी सुकुमारन

खामोश एहसास

(काव्य संग्रह)

मीनाक्षी सुकुमारन

अन्तराशब्दशक्तिप्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-60-5

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ ©मीनाक्षी सुकुमारन

मूल्य:४०.००रुपये

आवरणचित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलूकम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Khamosh Ehsas by 'Minakshi Sukumaran'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं।

समर्पण

दिल की जो बातें चाह कर भी जुबां पर नहीं आ पाती और "**खामोश एहसास** बन या तो दिल के दिल मे ही दबी रह जाती हैं या " मुखर हो शब्दों में बह निकलती है।

ऐसे ही मिले जुले भावों की भाव सरिता है ये पुस्तक जिस में खामोश एहसास अपनी बात कहते दिखते हैं।

हर वो बात जो होठों पर आते आते रुक गयी आप सभी के सामने इन कविताओं के माध्यम से रूबरू है।

आशा है आप शब्दों की सरलता से ज़्यादा उनके भावों को देखेंगे जो खामोशी से अपने एहसास बयां करते हैं।

आप के आशीर्वाद की अभिलाषी,.....

मीनाक्षी सुकुमारन

अनुक्रमणिका

1. कफ़न गुरूर का	5
2. दर्पण	6
3. फौजी की पत्नी	7
4. कौन हो तुम	8
5. रिश्तों की भीड़	9
6. प्रेम क्या है	10
7. ये मन	11
8. लकड़ियाँ	12
9. बेरंग	13
10.रंगमंच	14
11.द्वन्द	15
12.कैसी होली	16

कफ़न गुरूर का

मिट्टी के तन पर
क्यों ओढे है
कफ़न गुरूर का,
मौत से पहले ही
बेमौत मरता
और मारता क्यों है?
मिट्टी का ढेला भर ही
है ये तन
न कर मान-अभिमान
तू इस पर,
पल में हो जायेगा
जब राख ये तन
सिर्फ दुनिया याद
रखेगी तेरा मन,
हो सके तो बन्दे
जांच-परख चमका ले
बस उसे तू
है मिट्टी का ये तन
मत कर इस पे मान
तू कभी भी।

दर्पण

कहते हैं दर्पण
कभी झूठ नहीं बोलता,
यदि हां! तो फिर
क्यों नहीं दिखाता
ये असली चेहरा
क्यों नहीं दिखाता
है कितना छल कपट
छुपा दिखने वाले चेहरे के पीछे।
क्यों नहीं दिखा पाता
खिली मुस्कान के पीछे की
छुपी चुभन उदासी ये ।
क्यों नहीं दिखा पाता
मन के छुपे भाव
घृणा जलन के ये।
अगर दर्पण सच नहीं छुपाता
अगर दर्पण झूठ नहीं बोलता
फिर क्यों धोखा खा जाते हैं
हम चेहरों से अक्सर ही।

फौजी की पत्नी

फौजी की पत्नी हूँ
नहीं इख्तियार मुझे मिलन के गीत गुनगुनाने का
प्रीत के झूले झूलने का
चूड़ी की खनक से सजन को रिझाने का,
रुठने का मनाने का
पायल की रुनझुन से घर आँगन चहकाने का
सिन्दूर की लाली परइतराने का
क्योंकि सीमा पर कौनसी गोली पर
बिखर जाये मेरे जीवन की लड़ी
कब मैं फौजी की पत्नी से शहीद की पत्नी कहलाऊँ
है यही तो बस किस्मत
हम फौजी की पत्नी की
हर पल बस थमी सहमी रुकी-रुकी सी रहे सासें
ऐसे में क्या भाये कोई साज सिंगार
कोई दिन या कोई त्यौहार
फौजी की पत्नी हूँ मैं
कहते सभी कर गर्व इस बात पर
कौन देखे मेरे मन की पीड़ा
जिस का नसीब सिर्फ और सिर्फ इंतज़ार इंतज़ार
सूने सूने दिन और रातों का।

कौन हो तुम

बालों में सफेदी
आंखों के नीचे
गहरे काले घेरे
जगह जगह से
फूला शरीर
अनसंवरे बाल
रूखा सा चेहरा
देख छवि ये
दर्पण बोला
किस की छवि है ये?
कौन हो तुम??
क्या बोलेये छवि
जो हो जाती खुद
हैरान,
परेशान,
देख ये बदली काया
और रंग रूप ।।
कितना अजीब है
ये दर्पण ज़िन्दगी का
जहां अपना ही
अक्स जाता
बदल
उम्र और समय के साथ ।

रिश्तों की भीड़

कैसी अजब सी है धूप छांव सी ये ज़िन्दगी,
है रिश्तों की भीड़ फिर भी हर शख्स अकेला,

नहीँ कोई बंधन फिर भी है अनदेखी सी डोर,
सांसों की सांसो से जो जब तक रही चलती,

हज़ारों उलझने, हज़ारों रुसवाईयाँ,
कहीं पासे राजनैतिक, कहीं लगाई बुझाई,

लगे हर कोई बस जुदा सा ख़फ़ा सा,
पल में बदल जाये मंज़र जब थम जाये ये सांसे,

हर जीत लगे हार सी, हर प्रीत लगे हार सी,
हर मीत लगे हार सी, हर सांस लगे हार सी,

हर आंख में हो पानी, हर जुबां हो खामोश,
हर दिल हो गमगीन, क्यों आखिर क्यों?

दिखता ये मंज़र बार बार, सांसों के जुदा होने का,
क्यों देखने को प्यार मरना हुआ लाज़मी,

क्यों रहने को जिंदा मरना हुआ ज़रूरी,
काश की न हो इंतज़ार चाहने को,

काश बदले ये रिवायत,
काश बदले ये मंज़र।

प्रेम क्या है

बचपन की गोद
बचपन के अल्हड़ खेल
बचपन के गुड्डे गुड़िया का ब्याह
जवानी की उमंग
जवानी का लगाव
जवानी का सम्मोहन
वो अल्हड़ ख्वाब
वो किसी का भाना
वो किसी को देख खिल जाना
वो किसी का बिन बात इंतज़ार
आखिर प्रेम क्या है??
वो जो मन यूँ ही
संजो लेता है ख्वाबों में
या फिर धरातल पर
दिल से दिल का मिलना
जाना मैंने भी जब सच में
हुआ सामना इस से
न वो प्यार था जब हम किसी को अच्छे लगे
न वो प्यार थाजब हमें कोई अच्छा लगा
प्यार तो तब हुआ
जब सात फेरों के बाद
ज़िन्दगी से मुलाकात हुई
जगे एहसास,खिली धड़कनें, महके अल्फ़ाज़, लरसे हाथ
और यूँ साथ ने समझा दिया ज़िन्दगी का फलसफा
प्रेम क्या है?

ये मन

कभी रूठा सा
कभी माना सा
कभी सिमटा सा
कभी बिखरा सा
कभी उड़ता सा
कभी बंधा सा
कभी दूर सा
कभी पास सा
कभी सुनता सा
कभी मनमानी सा
कभी रोता सा
कभी हँसता सा
कभी शांत सा
कभी विफर सा
कभी टूटता सा
कभी बनता सा
कभी परवाह सा
कभी बेपरवाह सा
है कैसा ये मन,..
अजब सा गज़ब सा
अपना होकर भी पराया सा
एक पहेली सा...
अनकहा सा, अनदेखा सा
कभी साथ चलता कभी दूर भागता
ये मनये मन।...ये मन...

लकड़ियाँ

कोई ढूंढ रहा मसलों की लकड़ियाँ
सेकने की राजनितिक रोटियां,

कोई ढूंढ रहा ज़िन्दगी की लकड़ियाँ
जीने को फुटपाथ, झोपडी की बेबसी,

कोई ढूंढ रहा साथ की लकड़ियाँ
बनाने को बुढ़ापे का सहारा,

कोई ढूंढ रहा प्रेम की लकड़ियाँ
लाने को गर्माहट सर्द रिश्तों में,

पड़ी यूँ सर्द मौसम की यूँ मार ऐसी
किसी को निज स्वार्थ की लकड़ियाँ,

किसी को अपनेपनकी लकड़ियाँ
किसी को जीवित रहने की लकड़ियाँ,

किसी को चूल्हा जलाने की लकड़ियाँ
हर किसी को है चाहत सर्द मौसम की मार में,

अपनेपन से भरे जीवन को जीने की चाहत
और एहसास की लकड़ियाँ.....,।

बेरंग

रे मनवा सोच ज़रा
क्यूँ हुआ दुनिया का
रंग यूँ बेरंग,
क्यूँ चढ़ी सच्चाई पर
झूठ की परत,
क्यूँ सिसक रही प्रीत,
क्यूंकि रहा न मोल
कोई इंसा का,
तोल कोई जुबां का,
बस है बुनावट छल की,
पग पग हर डगर हर नगर,
ताना बाना फरेब का,
इसलिए
रे मनवा न सोच दुखा दिल अपना,
हर साँझ सहर यूँ
बिलख-बिलख
बिखर-बिखर।

रंगमंच

रंगमंच सी दुनिया
ये सारी,
जहाँ सबकी अपनी
अपनी हिस्सेदारी,
कोई रुलाए,
कोई हँसाए,
कोई सताए,
कोई संभाले,
कोई प्यारा,
कोई बेवफा,
चले बस ज़िन्दगी यूँ ही सारी,
कभी धूप दुख की,
कभी छांव सुख की,
कभी जीवन,
कभी मरन,
बस रंगमंच के दृश्यों सी,
बदलती रहे नियति हमारी,
रंगमंच ये जीवन,
हम बस पात्र इसके,..।

द्वन्द

बाहर बसंत,

भीतर पतझड़,

बाहर उल्लास,

भीतर रुदन,

बाहर शांत,

भीतर ज्वारभाटा,

बाहर प्रेम,

भीतर द्वेष,

है कैसा

ये द्वन्द दिलों का,..

बाहर कुछ,

भीतर कुछ,

एक अपना सा,

एक पराया सा।

कैसी होली

कैसे चढ़े रंग प्रीत का
कैसे उड़े अबीर गुलाल, कैसे महके टेसू,
कैसे मीठी हो गुजिया
हर दिशा जब हो दहकती नफ़रतें, बैर, अशांति,
जब हो सुलगता देश, शहर, गांव,
जब पड़ गया खून का रंग ही सफ़ेद,
कैसे चहके, खिले रंग कोई और उस पर,
कैसे हो प्यार, सदभाव जहाँ खिंची हो दीवारें,
कहीं देश, कहीं मजहब,
कहीं जाति, कहीं भाषा,
कही लिंग की कैसी आज़ादी?
किस से आज़ादी?
जब गिरवी तन मन नफ़रतों की गिरह में
लरसता बुढ़ापा, बिखरा यौवन,
तरसता बचपन, रोता किसान,
शहीद होता जवान
फिर किस का है ये कसूर
जो बिखरी हर उम्मीद,
हर एहसास, हर साँस,
हर आस यूँ कटी पतंग सी,
ए नज़ारों तुम ही कहो कुछ,
कहाँ खो गए रंग सारे प्यार, नेह, दुलार के,
कैसी होली फिर ये नाम की

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती मीनाक्षी सुकुमारन
जन्मतिथि - 18 सितम्बर 1967 (नई दिल्ली)
माता-पिता - श्रीमती कान्ता वधवा - श्री बद्रीनाथ वधवा
पति - श्री सी.एन.सुकुमारन
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (इग्लिश)
निवास स्थान - डी.214, रेल नगर प्लाट नं. ए 1
सेक्टर 50, नोएडा (यु.पी.) 201301
फोन नं. - 9810862418
मेल आई.डी. - virgo67@ymail.com
संप्रति - कवयित्री/लेखिका
विधा - छंद मुक्त (स्वतंत्र भाव) कविता, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, लेख आदि
रुचि - कविता लिखना, पुराने गीत (लता, मुकेश, रफ़ी), जगजीत सिंह, पंकज उदास की गज़लें सुनना बेहद प्रिय है।
प्रकाशन - निजी काव्य संकलन :- 1. भाव सरिता, 2. अहसास ऐ अल्फाज़ प्रकाशित। काव्य संग्रह 'तरंग' शीघ्र ही अवलोकित।
- साँझा संग्रह :- 2014 से 2018 अब तक 37 काव्य संग्रह, 6 कहानी व 2 समीक्षा, 1 विचार मंथन संकलन प्रकाशित।
- गुफ्तगू हिन्दुस्तानी साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका एवं महिला विशेषांक में 'परिशिष्ट'।
- सृजन समीक्षा (केन्द्रीय रचनाकार के रुप में हम प केन्द्रित)
- व्यक्तित्व कृतित्व टू मीडिया जून विशेषांक लोकार्पित।

सम्मान/पुरस्कार- साहित्य गरिमा 2014, साहित्य गौरव 2014, नारी गौरव 2015, काव्य गौरव 2015, माँ शारदे उत्कर्ष सम्मान 2015,दीपशिखा 2016, शब्द कलश 2016, साहित्य सम्मान 2016, युग सुरभि 2016, नारी सागर 2016, श्रेष्ठ शब्द शिल्पी 2016, राष्ट्रीय स्त्री शक्ति 2016, साहित्य गौरव आदि अनेकों सम्मान से सम्मानित।
- विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ द्वारा 'विद्यावचस्पति' उपाधि से सम्मानित।
- स्पेशल जूरी अवार्ड 2018, डायमंड एचीवर अवार्ड 2018, सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान 2018
- राष्ट्र गौरव अवार्ड 2018, राष्ट्रीय नारी गौरव अवार्ड 2018, भारतीय गौरव अवार्ड 2018,
- द मीडिया साहित्य सम्मान 2018 एवं अनेंको सम्मान से सम्मानित।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-60-5
मूल्य- 40/-